परनिन्दा स्वयं की हानि

ईशा चौधरी
C/o श्रीमती अंजू चौधरी

आधुनिक समाज में सम्पूर्ण मानव समाज निन्दा रूपी रोग से ग्रस्त है। प्रत्येक मनुष्य जो बोलने व सुनने में सक्षम है किसी ना किसी रूप में इस निन्दा रस का पान कर चुका है। शोधों द्वारा ज्ञात हुआ है कि हमारी निजी बातचीत का 60 प्रतिशत भाग व्यर्थ की बातें होती हैं। निन्दा के मोह जाल से कुछ विरले ही बचे हुए हैं। जहॉ कहीं भी चार लोग एकत्र होते हैं वहॉ पर किसी ना किसी रुप में अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में बातें अवश्य हो जाती हैं। कई बार तो ऐसी विचित्र स्थति भी सामने आती है जब निन्दा करने वाला व्यक्ति किसी अन्य में जिन दोषों का दर्शन करता है वह स्वयं ही उन दोषों से ग्रसित होता है वह जहां एक ओर अपने दोष के बारे में सुनना भी पसन्द नहीं करता वहीं दूसरी ओर वह दूसरे के सारे गुण छुपा कर उसके अवगुणों का बखान इस प्रकार करता है जैसे वह सर्वगुण सम्पन्न हो।

समाज में प्रत्येक वर्ग चाहे वह संत हो या ब्रह्मज्ञानी होने का दिखावा करने वाला साधू हो या धर्म का ठेकेदार हो। सबकी करनी एवं कथनी में जमीन–आसमान का अन्तर दिखाई देता है। वह जैसे ही जन समुदाय के सामने आता है अच्छाई का चोला पहन कर कहता है कि परनिन्दा सबसे बड़ा पाप है। परन्तु जैसे ही मंच से उतरता है अपने निजी सेवकों के सामने दूसरे संतों, साधुओं या धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की निन्दा में लिप्त हो जाता है। खुशी का मौका हो या गमी का, निन्दक की आँखें वहां भी निन्दा रस की वजह ढूंढ लेती हैं तथा इस महान कार्य में वह अपने अनमोल जीवन का एक बहुत बड़ा भाग सहर्ष ही दान कर देता है।

शोधों द्वारा यह भी पता चलता है कि आदमियों की तुलना में औरतें परनिन्दा का ज्यादा रसास्वादन करती हैं। वे अपने पति, ससुराल एवं ससुराल पक्ष के लोगों में ऐसे अवगुण ढूंढ लेती हैं जिनके बारे में स्वयं उस व्यक्ति को भी नहीं पता होता जिसकी चर्चा हो जाती है। ऐसा करते हुए वे यह भूल जाती हैं कि वे भी किसी और के परिवार का ससुराल पक्ष है। यदि वे सब भी उसके बारे में वही कहें जो वह कर रही है तो उसे कितनी परेशानी उठानी पड़ सकती है। इसी निन्दा गुण के कारण ही उनके अच्छे से अच्छे रिश्ते टूट कर बिखर जाते हैं फिर चाहे वह दोस्ती का रिश्ता हो या प्यार का या परिवार का, वह उसकी गरिमा खो देती है। निन्दा का यह रोग धरती पर केवल मानव नामक प्राणी को ही लगा है पशु, पक्षी, पेड़ पौधे इस रोग से सदा अछूते ही रहे हैं। मनुष्य के लिए कार्य इतना सहज एव सरल है जितना नित्य कर्म करना है।

प्रश्न यह उठता है कि निन्दा का यह रोग कब कैसे क्यों मानव जाति में व्याप्त हुआ। यह अनादि काल से चला आ रहा है देवता भी इससे अछूते नहीं क्योंकि जो स्तुति से प्रसन्न होते हैं वे ही केवल निन्दा से रूष्ट हो जाते हैं। इसके पीछे का विज्ञान है कि मानव को दूसरे मानव से रिश्ता कायम करने के लिए संवाद की आवश्यकता होती है। शोधकर्ताओं की मानें तो हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसमें हमारे चारों ओर बहुत कम रिश्ते उपलब्ध होते हैं। निन्दा एक ऐसा हथियार है जिसके माध्यम से हम एक दूसरे से जुड़े रिश्तों को मजबूती प्रदान करते हैं। हमें अपने दुश्मनों की बुरी खबर सुनने एवं फैलाने में जितना आनन्द मिलता है उतना अपने मित्रों के गुणों को फैलाने में अनुभव नहीं होता। उत्तरपूर्वी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ० जैक लैबिन का मत है कि परनिन्दा हमारे शरीर के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है उनका मानना है कि यह एक ऐसा बल है जो सामाजिक एवं व्यापारिक रिश्तों को बांधता है।

मनुष्य आज अपना मूल्यांकन अपने अन्दर निहित अच्छाइयों से नहीं करता वरन् सदैव अपनी तुलना दूसरे में निहित बुराइयों से करता है तभी वह जब भी किसी के अवगुणों की चर्चा

करता है तो उसका सीधा सा लक्ष्य होता है कि वह यह बता सके कि जो अवगुण उसमें हैं वह मेरे में नहीं। इसके कारण वह अमुक व्यक्ति से श्रेष्ठ है। नर की अपेक्षा नारी में इस रोग का कारण है कि वे एक दूसरे से सम्बन्ध भावनात्मक स्तर पर बनाती हैं जबकि पुरूषों के रिश्ते एवं संबन्ध क्रियाओं पर आधारित रहते हैं। कुछ लोगों का मत है कि परनिंदा समाज में असामाजिक तत्वों पर अंकुश रखने का कार्य करती है जिससे मानव सदा सजग रहता है कि उससे कोई भी कार्य ऐसा ना हो जिससे उसकी छवि पर कोई आँच आए। इसलिए यह निंदा का रोग चला आ रहा है।

जबकि यह सही नहीं है निन्दा से रिश्तों में दरार आती है तथा यह समाज में भय का वातावरण बनाती है जिससे तनाव जन्म लेता है। यही तनाव मनुष्य के मस्तिष्क को प्रभावित करता है जिससे उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है, उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है जिससे अन्ततः समाज का बुरा ही होता है।

मनुष्य जितना समय दूसरे के अवगुण ढूँढने में लगाता है उससे कहीं कम समय में वह अपने अवगुण देख कर उन्हें समाप्त करने का उपाय कर सकता है। मानव को सदा यह विचार करना चाहिए कि यदि हम किसी की छवि अपनी वाणी से खराब कर सकते हैं तो हमारी छवि भी कोई दूसरा अपनी वाणी से खराब कर सकता है। फिर क्या हमें ऐसा समाज चाहिए जिसमें किसी भी व्यक्ति की छवि उसके द्वारा किए गए अच्छे कार्यो के द्वारा नहीं अपितु दूसरों के दुष्प्रचार से बने? परनिन्दा का कारण हमारे ही भीतर छुपा कोई क्रोध या पीड़ा है जो दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्पन्न हुई थी एवं जिसका हमने निष्कासन सही रूप से नहीं किया था। हमारी ईर्ष्या, ध्यानाकर्षण एवं दूसरे से श्रेष्ठ दिखने की चाह ही हमें इस कुकृत्य के लिए उकसाती है। यह एक ऐसा पाप है जो परिवारों, रिश्तों एवं समाज की नींव हिला देता है। निंदक कुछ समय के लिए तो सबकी नजर में चढ़ जाता है परन्तु अन्ततोगत्वा उसका पतन निश्चित है। क्योंकि सबको अपने प्रति अच्छा व्यवहार ही चाहिए वे अपने प्रति अच्छाई ही चाहते हैं भले ही वे बुरे हों या बुराई करें। इस सम्बन्ध में छोटी सी अन्तर्कथा का उल्लेख अत्यन्त आवश्यक है। किसी समय एक देश में एक विदेशी को अपराधी समझ कर राजा ने उसे फाँसी का हुक्म दिया। सजा सुनकर वह व्यक्ति राजा को अपशब्द कहने लगा। राजा ने अपने महामंत्री को बुलाया जो कई भाषाओं का जानकार एवं बुद्धिमान होने के साथ–साथ दयालु भी था। वह जानता था कि विदेशी निर्दोष है एवं राजा ने क्रोधवश एवं भ्रमवश ऐसा किया है। महामंत्री ने राजा से कहा कि यह विदेशी आपको दुआएं दे रहा है। इतना सुनते ही महामंत्री से द्वेष रखने वाला अन्य मंत्री बोला महाराज महामंत्री जी झूठ बोल रहे हैं यह व्यक्ति आपको गालियां दे रहा है। राजा ने पुनः महामंत्री से सच्चाई बताने को कहा तो महामंत्री ने कहा महाराज यह सत्य है कि वह गाली दे रहा है क्योंकि वह निरपराध है। अतः मैंने इसके प्राणों एवं आपकी प्रसिद्धि की रक्षा करने के उद्देश्य से ऐसा कहा। राजा ने उस व्यक्ति को सजा से मुक्त कर दिया एवं उस मंत्री को यह कह कर देश निकाला दे दिया कि मुझे अपने राज्य में ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं जो केवल ईर्ष्यावश हित–अनहित का ध्यान न रखे। निन्दक भले ही सर्वगुण सम्पन्न हो फिर भी अपने इस एक ही अवगुण होने के कारण सामाज में अपनी प्रतिष्ठा, विश्वास प्रेम सब कुछ गवां बैठता है। अतः यदि कोई आपके सामने निन्दा करे तो उससे अप्रभावित रहें तथा यदि कोई आपको बताए कि अमुक व्यक्ति आपके बारे में गलत कह रहा था तो कबीर दास का दोहा उसे सुनाएं।

निंदक निअरे राखिए आगन कुटी छपाय
बिन पानी साबुन बिना निर्मल कर सुहाय।

अर्थात् यदि कोई हमारे अन्दर दोष दिखा रहा है और हमें भी आत्म अवलोकन से उस दोष के दर्शन हो रहे हैं तो हम उस निन्दक का धन्यवाद करते हैं एवं उस दोष को दूर करने का प्रयास करेंगे।